अध्याय 17

हारून की छड़ी

किस प्रकार के लोग परमेश्वर के याजकों के रूप में सेवा कर सकते थे? मूसा ने इस्राएल के विद्रोह की कहानी जारी रखते हुए इस प्रश्न का उत्तर दिया। कोरह, दातान और अबीराम ने 250 "नामी लोगों" के साथ मिलकर (16:2) मूसा और हारून के अधिकार को चुनौती दी और उन्हें मृत्यु दण्ड मिला। लेवी और रूबेन गोत्र के इन पुरुषों ने याजकपद में कार्य करने के लिए हारून के परिवार के विशेष अधिकारों को चुनौती दी। जब अन्य लोगों ने इनका साथ दिया तब परमेश्वर ने एक महामारी भेजी जिसके कारण उनमें से 14,700 लोग मार डाले गए। यह अध्याय रिकार्ड प्रदान करता है कि किस प्रकार परमेश्वर ने एक ही बार में सदा के लिए याजकपद के प्रति उठने वाले प्रश्नों का उत्तर दे दिया। उसने एक प्रतियोगिता का आयोजन करते हुए यह प्रकट किया कि उसने किस गोत्र को चुना है।

एक दिव्य परीक्षा (17:1-7)

[1]तब यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएलियों से बातें करके उन के पूर्वजों के घरानों के अनुसार, उनके सब प्रधानों के पास से एक एक छड़ी ले; और उन बारह छड़ियों में से एक एक पर एक एक के मूल पुरुष का नाम लिख, [3]और लेवियों की छड़ी पर हारून का नाम लिख। क्योंकि इस्राएलियों के पूर्वजों के घरानों के एक एक मुख्य पुरुष की एक एक छड़ी होगी। [4]और उन छड़ियों को मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के आगे, जहाँ मैं तुम लोगों से मिला करता हूँ रख दे। [5]और जिस पुरुष को मैं चुनूँगा उसकी छड़ी में कलियाँ फूट निकलेंगी; और इस्राएली जो तुम पर बुड़बुड़ाते रहते हैं, वह बुड़बुड़ाना मैं अपने ऊपर से दूर करूँगा।" [6]अतः मूसा ने इस्राएलियों से यह बात कहीं; और उनके सब प्रधानों ने अपने अपने लिये, अपने अपने पूर्वजों के घरानों के अनुसार, एक एक छड़ी उसे दी, इस प्रकार बारह छड़ियाँ हुईं; और उनकी छड़ियों में हारून की भी छड़ी थी। [7]उन छड़ियों को मूसा ने साक्षीपत्र के तम्बू में यहोवा के सामने रख दिया।

आयतें 1, 2. अध्याय 16 में लोगों की शिकायतों के कारण आने वाली विपत्ति के बाद परमेश्वर ने यह स्पष्ट करने के लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन किया कि याजकों के रूप में उसकी सेवा करने के लिए उसने किस गोत्र को चुना है। उसने **मूसा** से कहा कि वह इस्राएलियों से कहे कि वे **उन के पूर्वजों के घरानों** का

प्रतिनिधित्व करने के लिए **एक छड़ी** लाएँ और **उन बारह छड़ियों** में से एक एक पर एक एक के मूल पुरुष का **नाम लिखें**। डब्लू. एच. बेलिंगर, जूनियर, ने यह विचार किया कि इस प्रतियोगिता में काम में ली गई "छड़ियाँ" वे "नई ताज़ा डालियाँ नहीं थीं जो अभी अभी काटी गई हों परन्तु अधिकार का चिन्ह प्रकट करने के लिए प्रत्येक गोत्र के अगुवे के द्वारा वहन की जाने वाली कार्यकारी लाठियाँ थीं।"[1] "छड़ी" अथवा "लाठी" (מַטֶּה, *मट्टेह)* के लिए काम में लिए जाने वाले इब्रानी शब्द का अर्थ "गोत्र" भी हो सकता है जो चिन्हीकरण को ऊँचाई प्रदान करता है। "वह 'छड़ी' जिसमें से कलियाँ फूट निकलेंगी," के लिए बेलिंगर ने कहा कि वह, "उस 'गोत्र' का चिन्ह प्रदान करती है और वही दिव्य चुनाव के अन्तर्गत है।"[2]

आयत 3. इसके साथ ही **लेवियों की छड़ी पर हारून का नाम** लिखा जाना था। परमेश्वर के द्वारा नियुक्त महायाजक होने के कारण वह याजक गोत्र का अगुवा था।

आयत 4. तब उन छड़ियों को निवासस्थान में - **मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के आगे** रात भर रखा जाना था जहाँ के लिए परमेश्वर ने कहा कि वह अपने लोगों से **मिला करेगा**। अन्य शब्दों में, छड़ियों को वाचा के सन्दूक के सम्मुख परमपवित्र स्थान में छोड़ा जाना था। सन्दूक में व्यवस्था की दो पटियाएँ थीं जिन्हें "साक्षीपत्र" बताया गया (निर्गमन 25:21; 31:18; 32:15; 34:29)।

आयत 5. परमेश्वर ने जिस **पुरुष की छड़ी** को चुना उसमें **कलियाँ फूटने** वाली थी जिससे यह संकेत प्राप्त हो कि याजक होने के लिए उसने किस गोत्र को चुना है और इससे जो लोग मूसा और हारून के नेतृत्व के बारे में **बुड़बड़ा** रहे थे उन्हें चुप किया जा सके।

आयत 6. लोगों ने परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया: **उनके सब प्रधानों ने** [मूसा को] **अपने अपने लिये, अपने अपने पूर्वजों के घरानों के अनुसार, एक एक छड़ी दी।** इस प्रकार **बारह छड़ियाँ हुईं** - अर्थात बारह गोत्रों के अनुसार एक एक छड़ी जिसमें यूसुफ के वंशज एप्रैम और मनश्शे के गोत्र शामिल थे - साथ ही संख्या में तेरहवीं छड़ी **हारून की छड़ी** थी जो लेवी गोत्र का स्थान बताती थी।

आयत 7. तब उन छड़ियों को मूसा ने साक्षीपत्र के तम्बू में यहोवा के सामने रख दिया। यह आयत 4 में दिए गए निर्देशों के अनुसार है।

एक स्पष्ट प्रदर्शन (17:8-11)

[8]दूसरे दिन मूसा साक्षीपत्र के तम्बू में गया; तो क्या देखा कि हारून की छड़ी जो लेवी के घराने के लिये थी उस में कलियाँ फूट निकलीं, अर्थात् उसमें कलियाँ लगीं, और फूल भी फूले, और पके बादाम भी लगे हैं। [9]तब मूसा उन सब छड़ियों को यहोवा के सामने से निकालकर सब इस्राएलियों के पास ले गया; और उन्होंने अपनी अपनी छड़ी पहिचानकर ले ली। [10]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून की छड़ी को साक्षीपत्र के सामने फिर धर दे, कि यह उन दंगा करनेवालों के लिये एक निशान बनकर रखी रहे कि तू उनका बुड़बुड़ाना जो मेरे विरुद्ध होता रहता है

भविष्य में रोक रखे, ऐसा न हो कि वे मर जाएँ।" 11और मूसा ने यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार ही किया।

आयत 8. दूसरे दिन मूसा साक्षीपत्र के तम्बू में गया जिससे वह वहाँ से छड़ियाँ लाए और इस्राएल को दिखाए कि परमेश्वर ने किस गोत्र को चुना है। जब उसने पाया कि **लेवी के घराने** का प्रतिनिधित्व करने वाली **हारून की छड़ी** में न केवल **कलियाँ फूट निकलीं** परन्तु उसमें **कलियाँ** भी **लगीं** हैं, **और फूल भी फूले** हैं, **और पके बादाम भी लगे हैं** तब वह बहुत ही आश्चर्यचकित रह गया होगा!

स्पष्ट रूप से वहाँ पर एक चमत्कार हुआ था। हम बादाम की एक ताज़ा कटी हुई डाली की कल्पना कर सकते हैं जिसमें कलियाँ फूट निकली हैं। एक लम्बे समय तक उसको एक लाठी के रूप में काम में लिया गया; अब आगे उसमें किसी प्रकार की कलियाँ नहीं फूटी और न ही कलियाँ लगीं। इसके स्थान पर परमेश्वर के सामर्थ्य के द्वारा इस सूखी हुई लकड़ी में अचानक "कलियाँ" लगने लगीं, "फूल भी फूलने लगे" और यह "पके हुए" बादाम उत्पन्न करने लगी - यह सब एक ही समय में होने लगा! इस प्रकार की बातें स्वाभाविक रूप से नहीं हो जाती है।

आयत 9. तब मूसा उन सब छड़ियों को ले आया और उसने प्रत्येक गोत्र के अगुवे को एक एक छड़ी दे दी; **और उन्होंने अपनी अपनी छड़ी पहिचानकर ले ली।** "अपनी छड़ी पहिचानकर" टिप्पणी संकेत देती है कि उन्होंने हारून की छड़ी को अपनी छड़ी समझा और समझ गए कि परमेश्वर ने बिना किसी सन्देह के लेवी गोत्र को - विशेष रूप से हारून के परिवार को - अपना याजक होने के लिए चुना है।

आयतें 10, 11. परमेश्वर ने तब मूसा को निर्देश दिए कि **वह हारून की छड़ी को साक्षीपत्र के सामने फिर धर दे जिससे यह उन दंगा करनेवालों के लिये एक निशान बनकर रखी रहे** जिससे उन्हें बुड़बुड़ाने से रोका जा सके **कि वे मर न जाएँ।** दो सच्चाइयाँ निरन्तर याद रखने के लिए छड़ी को परमपवित्र स्थान में ही रखे रखना था: याजक होने के लिए परमेश्वर ने हारून के परिवार को चुना था और परमेश्वर के चुने हुए याजक के विरुद्ध बलवा करने के परिणाम भयंकर हो सकते हैं। एक बड़ी विडंबना यह है कि जब यह छड़ी दृश्य वस्तु के रूप में सेवा के लिए थी परन्तु इसे परमपवित्र स्थान में रख दिया गया जहाँ इसे महायाजक को छोड़ और कोई नहीं देख सकता था - और उसके द्वारा भी वर्ष में एक बार ही इसे देखा जा सकता था। यह एक "निशान" के रूप में थी क्योंकि इसकी कहानी लोगों को इसका अर्थ निरन्तर याद दिलाती थी (यूहन्ना 20:30, 31 के साथ तुलना करें)। अन्त में, छड़ी को वाचा के सन्दूक के अन्दर रख दिया गया (इब्रा. 9:4)। यह अनुच्छेद यह कहते हुए समाप्त होता है कि **मूसा** ने - इस अवसर पर अन्य अवसरों के समान - **यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार ही किया।**

परिणामस्वरुप एक डर (17:12, 13)

12तब इस्राएली मूसा से कहने लगे, "देख, हमारे प्राण निकलने वाले हैं, हम

नष्ट हुए, हम सब के सब नष्ट हुए जाते हैं। [13]जो कोई यहोवा के निवास के समीप जाता है वह मारा जाता है। तो क्या हम सब के सब मर ही जाएँगे।"

आयतें 12, 13. हारून के परिवार को चुने जाने के बारे में परमेश्वर के प्रकटीकरण से लोगों ने निष्कर्ष निकाला कि कोई अन्य व्यक्ति अगर **यहोवा के निवास के समीप** जाएगा तो वह मर जाएगा। वे पुकारने लगे, **"क्या हम सब के सब मर ही जाएँगे?"** उन्होंने सोचा कि वे सब के सब **मारे जाएँगे**।

किस बात से वे डरने लगे? सम्भावित रूप से वे मात्र हारून की छड़ी में कलियाँ लगने के कारण ही नहीं परन्तु पिछले कुछ दिनों की सब घटनाओं के अनुसार प्रतिक्रिया कर रहे थे। उन्होंने देखा था कि जिन लोगों ने मूसा के अधिकार के विरुद्ध बलवा किया उन्हें पृथ्वी ने अपना मुँह खोलकर निगल लिया। वे इस बात के गवाह थे कि जिन लोगों ने याजक के रूप में हारून के परिवार का स्थान लेना चाहा उन्हें नष्ट करने के लिए स्वर्ग से आग गिरी। उन्होंने एक महामारी देखी जिसने उनके देश के हज़ारों लोगों को नष्ट कर दिया जो विद्रोह करने वाले लोगों के साथ थे। अब वे परमेश्वर के चमत्कारी प्रकटीकरण के गवाह थे कि परमेश्वर ने अपने लिए याजकीय गोत्र होने के लिए हारून और लेवियों को चुना है। अन्त में उन्होंने परमेश्वर के चुनावों को स्वीकार करने के महत्व को - और परमेश्वर की योजनाओं को अनदेखा करने या उनको तुच्छ जानने में शामिल खतरे को जान लिया था! जब परमेश्वर ने अपने ही लोगों को इस प्रकार नष्ट कर दिया तो अगर वे निवासस्थान के निकट जाते, जहाँ पर परमेश्वर निवास करता था, तो क्या उन्हें मरना नहीं पड़ता? इस प्रश्न का उत्तर अगले अध्याय में दिया गया है।

अनुप्रयोग

नेतृत्व में एक संकट: विभिन्न वर्गों में विद्रोह (अध्याय 16; 17)

चार्ल्स नोर्डोफ़ और जेम्स नोरमन हॉल के द्वारा लिखा गया उपन्यास *म्युटिनी ऑन द बौंटी (उदारता पर विद्रोह)*, अठारहवीं शताब्दी में एक अंग्रेज़ जहाज़ पर उत्पन्न विद्रोह का वर्णन करता है। एक और "विद्रोह" के बारे में हम गिनती 16 और 17 में पढ़ते हैं - जंगल में इस्राएल के वर्गों में हुआ एक विद्रोह। इस विद्रोह ने अगुवों में एक संकट उत्पन्न कर दिया। इन अध्यायों पर जो प्रश्न शासन करता है वह यह है कि "मुखिया कौन रहेगा?" जब तक उस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया तब तक वायदे के देश की ओर आगे की यात्रा में इस्राएल कोई उन्नति प्राप्त नहीं कर सका।

सम्पूर्ण विश्व में अनेक मण्डलियों में, *हमारे* वायदे के देश की ओर बढ़ने की उन्नति में उस समय बाधा आ जाती है जब भाइयों में तर्क वितर्क होता है कि मुखिया कौन रहेगा। अधिकतर कलीसिया के विभिन्न वर्गों में एक विद्रोह देखा जा सकता है। इस्राएल के नेतृत्व की समस्या बहुत अधिक हमारी जैसी है। इस कारण नेतृत्व में उनके संकटों का अध्ययन करने के द्वारा हम स्वयं के लिए ऐसे तरीकों की

खोज कर सकते हैं जिससे उनके निवारण प्राप्त करने में सहायता प्राप्त कर सकें।

मूसा के विरुद्ध एक बलवा। चार इस्राएली - कोरह, दातान और अबीराम और ओन - उस जाति के अन्य 250 अगुवों के साथ उठ खड़े हुए और "मूसा और हारून के विरोध में एक साथ हो गए।" जैसा ओन का नाम कहानी के शेष भाग में नहीं लिया गया है इसलिए प्रायः इस विद्रोह के लिए ऐसा सोचा जाता है कि यह कोरह, दातान और अबीराम के द्वारा किया गया। उन्होंने कहा, "तुम ने बहुत किया, अब बस करो; क्योंकि सारी मण्डली का एक एक मनुष्य पवित्र है, और यहोवा उनके मध्य में रहता है; इसलिये तुम यहोवा की मण्डली में ऊँचे पदवाले क्यों बन बैठे हो?" (16:3)।

ऐसा कहते हुए उन्होंने एक सच्ची बात कही परन्तु एक महत्वपूर्ण सच्चाई को अनदेखा कर दिया। सच्चाई यह है कि सारी मण्डली पवित्र थी! परमेश्वर के लोग "पवित्र लोग" थे। जैसा भजन संकेत देता है कि प्रत्येक इस्राएली पुरुष अथवा स्त्री स्वयं की प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर तक पहुँच रखते थे। फिर भी बलिदान के उद्देश्य से परमेश्वर के सम्मुख आने के लिए इस्राएलियों के पास याजक थे। अनदेखी सच्चाई यह है कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को उनके स्थान में नियुक्त किया था - जिसमें मूसा को अगुवे और व्यवस्था देने वाले के रूप में और हारून को महायाजक के रूप में रखा था। हालांकि प्रत्येक इस्राएली पवित्र था फिर भी लोगों के लिए यह आवश्यक था कि वे परमेश्वर के द्वारा नियुक्त अगुवों की माने।

कोरह और अन्य लेवियों के विद्रोह के पीछे की मंशा क्या थी? उनमें से एक मंशा याजकों के रूप में कार्य करने की उनकी इच्छा थी। मूसा ने कोरह और उसकी सारी मण्डली से कहा, "सबेरे यहोवा दिखला देगा कि उसका कौन है, और पवित्र कौन है ..." (16:5)। तब उसने एक परीक्षा का प्रस्ताव रखा: कोरह और उसके लोगों को अपने अपने धूपदान में आग रखनी थी और हारून को भी ऐसा ही करना था। तब परमेश्वर यह संकेत देने वाला था कि उसने किसे चुना है। स्वयं के लिए मूसा के निर्णायक कथन में कोरह की मंशा स्पष्ट कर दी गई:

> हे लेवियो, सुनो, क्या यह तुम्हें छोटी बात जान पड़ती है कि इस्राएल के परमेश्वर ने तुम को इस्राएल की मण्डली से अलग करके अपने निवास की सेवा करने, और मण्डली के सामने खड़े होकर उसकी भी सेवा टहल करने के लिये अपने समीप बुला लिया है; और तुझे और तेरे सब लेवी भाइयों को भी अपने समीप बुला लिया है? फिर भी तुम याजक पद के भी खोजी हो? (16:8-10)।

एक अन्य मंशा स्पष्ट रूप से इस्राएल की अगुवाई करने की इच्छा थी जैसा मूसा अगुवाई कर रहा था। यह इच्छा उस समय स्पष्ट हो जाती है जब दातान और अबीराम ने मूसा के आदेश पर आने से मना कर दिया। उन्होंने तीन गलतियों के लिए मूसा पर दोष लगाया: उसके द्वारा "दूध और मधु की धाराएँ बहने" वाले देश में लाने का वायदा पूरा करने में वह असफल रहा; वह अपने अधिकार का गलत प्रयोग करता है; और यह कहते हुए उन्हें धोखा देता है या उनकी हानि करता है, "क्या तू इन लोगों की आँखों में धूल डालेगा?" (16:12-14)।

हालांकि कोरह एक लेवी था और दातान और अबीराम, याकूब के बारह पुत्रों में से पहले पुत्र रूबेन के वंशज थे। हो सकता है कि उन्होंने स्वयं को प्रमुख गोत्र के अगुवों से होने के रूप में देखते हुए यह सोचा कि मूसा और हारून, जो तीसरे पुत्र लेवी के गोत्र से थे उनके स्थान पर उन्हें इस्राएल की अगुवाई करनी चाहिए। वे लेवियों के समान जानबूझकर यह भूल गए कि परमेश्वर ने मूसा को उसे दिए गए स्थान में अगुवाई के लिए रखा है।

उनका विद्रोह कितना गम्भीर था? जैसा कि यह परमेश्वर के चुने हुए अगुवों को अस्वीकार करना था इसलिए मूसा के अनुमान के अनुसार यह स्वयं परमेश्वर को अस्वीकार करना था (16:11)। उनके पाप की गम्भीरता के बारे में ऐसा लगता है कि परमेश्वर मूसा से सहमत था। उसने उनके विद्रोह के प्रति चार तरीकों से प्रत्युत्तर दिया:

पहला, उसने मूसा की यह प्रार्थना सुनी कि वह विद्रोहियों का बलिदान स्वीकार नहीं करे (16:15) और उसने स्वर्ग से आग भेजी जिसने "उन ढाई सौ धूप चढ़ानेवालों को भस्म कर डाला" (16:35)। परमेश्वर ने यह प्रकट किया कि मात्र हारून और उसका परिवार जो याजक थे उन्हें यह अधिकार प्राप्त था कि वे धूप चढ़ा सकें।

दूसरा, सम्पूर्ण मण्डली को नष्ट करने की चेतावनी देने के बाद और मूसा और हारून के द्वारा रोके जाने के बाद भी परमेश्वर ने ऐसा किया कि पृथ्वी ने अपना मुँह पसारा और विद्रोहियों के परिवारों को निगल लिया (16:20-33)। जैसा मूसा ने कहा वैसा परमेश्वर ने किया जिससे मण्डली के लोग "जान लें कि यहोवा ने मुझे भेजा है कि यह सब काम करूँ, क्योंकि मैं ने अपनी इच्छा से कुछ नहीं किया" (16:28)।

तीसरा, परमेश्वर ने उन लोगों पर महामारी भेजी जो विद्रोहियों के साथ थे। मूसा और हारून ने मध्यस्थता की। हारून धूपदान लेकर मण्डली के बीच में दौड़ा और उसका बलिदान प्रभावी था: "वह मुर्दों और जीवित के मध्य में खड़ा हुआ; तब मरी थम गई" (16:48)। महामारी रुकने से पहले "जो कोरह के संग भागी होकर मर गए थे" उन्हें छोड़ जो लोग इस मरी से मर गए वे 14,700 थे (16:49)।

चौथा, परमेश्वर ने सार्वजनिक और चमत्कारिक रूप से हारून को चुना (अध्याय 17)। याजक के रूप में कौन सेवकाई करेंगे इसके लिए शेष पूरे समय के लिए इस प्रश्न के उत्तर के लिए परमेश्वर ने एक प्रकार की प्रतियोगिता के लिए निर्देश दिए। प्रत्येक गोत्र को एक छड़ी लानी थी जिस पर गोत्र के अगुवे का नाम लिखा हो। लेवी गोत्र की छड़ी पर हारून का नाम लिखा था। छड़ियों को रात भर निवासस्थान में रखा जाना था और अगली सुबह "हारून की छड़ी जो लेवी के घराने के लिये थी उस में कलियाँ फूट निकलीं, अर्थात् उसमें कलियाँ लगीं, और फूल भी फूले, और पके बादाम भी लगे" (17:8)। यह सुनिश्चित करने के लिए कि इस्राएल इस पाठ को समझ सके, "तब मूसा उन सब छड़ियों को यहोवा के सामने से निकालकर सब इस्राएलियों के पास ले गया" (17:9)। प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी कि वह हारून की छड़ी को फिर से तम्बू में रख दे। इसे वाचा के सन्दूक के निकट

रखा गया और बाद में सन्दूक में रख दिया गया, "कि यह उन दंगा करनेवालों के लिये एक निशान बनकर रखी रहे" और परमेश्वर के विरुद्ध "उनका बुड़बुड़ाना" भविष्य में रोक रखे (17:10)।

इन घटनाओं का परिणाम क्या रहा? परमेश्वर ने लोगों के सम्मुख सिद्ध कर दिया कि मूसा और हारून वास्तव में उसके चुने हुए अगुवे हैं। इससे अधिक महत्वपूर्ण, उसने उन्हें सिखाया कि उसके अगुवों को अस्वीकार करना स्वयं परमेश्वर को अस्वीकार करना था।

लोगों ने शायद यह समझ लिया था कि ऐसे परमेश्वर के साथ जुड़ना छोटी बात नहीं है जो इस प्रकार के बड़े और भयानक काम कर सका। वे चिल्लाने लगे, "देख, हमारे प्राण निकलने वाले हैं, हम नष्ट हुए, हम सब के सब नष्ट हुए जाते हैं। जो कोई यहोवा के निवास के समीप जाता है वह मारा जाता है। तो क्या हम सब के सब मर ही जाएँगे।" (17:12, 13)। उन्होंने एक ऐसा पाठ सीखा था जो उनके लिए अत्यन्त आवश्यक था - अर्थात, कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की पवित्र वस्तुओं को हल्के में नहीं ले सकता! वह वास्तव में ऐसा परमेश्वर है जिससे भय रखा जाना चाहिए!

चेतावनी: हमें परमेश्वर के द्वारा नियुक्त अगुवों के अधिकार को स्वीकार करना चाहिए। यह पद "नेतृत्व में एक संकट" के बारे में है। ऐसा भी कहा जा सकता है कि यह "अधिकार में एक संकट" के बारे में है। अकसर, नेतृत्व की समस्याएँ वास्तव में अधिकार की समस्याएँ है: कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हें आज्ञा मानने की भूमिका स्वीकार करने की इच्छा रखनी चाहिए परन्तु वे इसके स्थान पर नेतृत्व की भूमिकाएँ छीन लेने की खोज करते हैं। तब इस प्रकार के प्रश्न उठ खड़े होते हैं जैसे इस्राएल में उठे: "मुखिया कौन रहेगा?"; "अगुवाई किसके द्वारा की जानी चाहिए?"

हमारे संसार में अधिकार के दृष्टिकोण को अस्वीकार करने की एक पद्धति है। हम राष्ट्र में, घर में और कलीसिया में विद्रोह पाते हैं। परमेश्वर ने अगुवे नियुक्त किए हैं जिनके प्रति हमें अधीन होना चाहिए।

1. हमारे राष्ट्र में और समुदायों में परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम उन अधिकारों के अधीन हों जो शासन करते हैं। "हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारियों के अधीन रहे, क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं।" (रोम. 13:1)। इस कारण नागरिक अधिकार के प्रति अनाज्ञाकारिता करना परमेश्वर के प्रतिनिधियों के विरुद्ध बलवा करना है। समाज में अधिकतम, अगर अधिकतर नहीं हों, अपराध और हिंसा अधिकार स्वीकार करने से मना करने के परिणामस्वरूप हैं।

2. घर, परमेश्वर के द्वारा दिया हुआ आकार है जिसमें पति, पत्नी का सिर है और पत्नी को चाहिए कि वह अपने पति के अधीन हो। बच्चे अपने माता पिता का आदर करें और उनकी आज्ञा मानें (इफि. 5:22-6:4)। पुरुषों को चाहिए कि वे अपने स्थान का प्रयोग प्रेम के साथ करें जैसा मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया। अगर कोई महिला अपने पति के अधीन होने से मना करती है तो वह परमेश्वर के द्वारा दिए गए निर्देशों के विरुद्ध बलवा करती है। जब बच्चे अपने माता पिता की

आज्ञा नहीं मानते तब वे उन लोगों के विरुद्ध दोषी हो जाते हैं जिन्हें परमेश्वर ने उन पर नियुक्त किया है।

3. इस्राएल के प्रति परमेश्वर की शिक्षाओं को कलीसिया पर भी लागू किया जा सकता है। निःसन्देह, हमें इस्राएल की परिस्थिति और हमारी परिस्थिति के बीच कुछ अन्तर के बारे में जानकारी होनी चाहिए। उनके अगुवे परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किए गए थे। उसने उनसे बातें की, उनके द्वारा अपनी इच्छा प्रकट की और चमत्कारों के द्वारा उनके नेतृत्व के अधिकार को प्रमाणित किया। जिस समय स्थानीय मण्डलियों के अगुवे, एक अर्थ में, परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किए गए थे (प्रेरितों 20:28), फिर भी उसने लोगों को सीधे तौर पर नियुक्त नहीं किया। उसने उनके द्वारा अपनी इच्छा सीधे तौर पर भी प्रकट नहीं की जैसा उसने मूसा के द्वारा किया। वर्तमान में परमेश्वर चमत्कार इसलिए नहीं करता कि मण्डलियाँ जान लें कि उनका सही अगुवा कौन है।

यहाँ पर दिए गए अन्तरों के साथ ही सम्भावित रूप से इस पद को लागू करने का सबसे उत्तम तरीका यह है कि यह पहचान की जाए कि हम परमेश्वर के प्रतिनिधियों को अस्वीकार करने के दोषी हो सकते हैं जिनके द्वारा उसने अपनी इच्छा प्रकट की - वे प्रतिनिधि मसीह और वे लोग हैं जिन्होंने नया नियम के प्रेरक शब्द लिखे। जो कोई मसीह और उसकी इच्छा को अस्वीकार करता है वह विद्रोह का दोषी है।

साथ ही, परमेश्वर के चुने हुए अगुवों के अधिकार के अधीन होने के सिद्धान्त को हम कलीसिया में लागू कर सकते हैं। नया नियम सिखाता है कि मसीही लोग किसी मण्डली के प्राचीनों के नेतृत्व के अधीन हों (इब्रा. 13:17)।

प्राचीन उन मण्डलियों पर कुछ अधिकार रखते हैं जिनकी वे अगुवाई करते हैं। "प्राचीन," "अध्यक्ष," और "चरवाहे" शब्द सुझाते हैं कि वे अधिकार का स्थान रखते हैं क्योंकि बाइबल के समय में ये तीनों शब्द अधिकार या नेतृत्व का अर्थ प्रदान करते थे। आगे, कलीसिया को आज्ञा दी गई कि वह अपने अगुवों के अधीन रहे, जो कि फिर से सुझाता है कि प्राचीनों की भूमिका इसके साथ अधिकार का एक माप लिए चलती है।

सम्भावित रूप से नया नियम साक्ष्य को निर्णायक स्थिति तक पहुँचाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि नोट किया जाए कि प्राचीनों के पास अधिकार हैं परन्तु उन्हें इसकी स्वीकृति नहीं थी कि वे अधिकार अपने हाथ में लेते हुए या अभिमानी होकर एक आधिकारिक तरीके से इसका प्रयोग करें। नया नियम की शिक्षा स्पष्ट है: प्रत्येक मसीही जहाँ आराधना करता है या करती है उस मण्डली के अध्यक्ष का आदर करे, उसके अधीन हो और आनन्द के साथ उसकी आज्ञा माने। क्यों? अनेक कारणों से वे ऐसा करें - परन्तु विशेषकर इसलिए कि परमेश्वर ने उन्हें प्राचीन बनाया है। पौलुस ने, प्रेरितों 20:28 में प्राचीनों से कहा, "इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो।" इस कारण, कलीसिया के अगुवों के विरुद्ध बलवा करने का अर्थ है परमेश्वर के द्वारा नियुक्त नेतृत्व के विरुद्ध

बलवा करना!

क्या हमारे लिए यह बहुत ही कठिन है कि हम किसी अन्य व्यक्ति के अधीन हों और अन्य व्यक्ति की अगुवाई में चलें? मसीह में अधीनता कठिन है। संसार में लोग ताकत पाने के लिए संघर्ष करते हैं परन्तु मसीह के राज्य में ऐसा न हो! कलीसिया में, "मुखिया कौन है?" एक ऐसा प्रश्न है जो कभी कभार ही पूछा जाना चाहिए। जो लोग सेवकाई से सम्बन्ध रखते हैं उनके लिए प्राचीनों के नेतृत्व में चलना कोई समस्या नहीं होनी चाहिए।

निष्कर्ष। गिनती में युद्ध से सम्बन्धित एक भाव पाया जाता है; यह एक सेना - परमेश्वर की सेना - के बारे में है जिसे वायदे के देश पर जीत पाने के लिए भेजा गया। अगर किसी सेना के वर्गों में विद्रोह पाया जाए तो वह न तो जीत सकती है और न ही जीवित रह सकती है। अगर हम "प्रभु की सेना" के रूप में शैतान, पाप और संसार को हराना चाहते हैं तो हमें विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर के आदेशों को मानना चाहिए। ऐसा हो कि हमारे प्राचीन सही प्रकार से अगुवाई करें - वे सेवक अगुवों के रूप में ऐसा करें परन्तु परमेश्वर की विरासत "पर प्रभुता" नहीं करें परन्तु झुण्ड के लिए उदाहरण बन सकें। ऐसा हो कि शेष हम सब लोग आनन्द से उनकी अगुवाई में सेवकाई करने की इच्छा के साथ चल सकें।

समाप्ति नोट्स

[1] डब्लू. एच. बेलिंगर, जूनियर, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेंट्री (पीबॉडी, मासाचुसेट्सः हेन्ड्रिक्शन पब्लिशर्स, 2001), 245. [2]उपरोक्त.